डॉट्स
पूरा कोर्स। पक्का इलाज

NATIONAL RURAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन

नुक्कड़ नाटक

कुछ नहीं मुश्किल

राज्य टीबी कार्यालयों द्वारा नुक्कड़ नाटक पर
आधारित सुझाई गई कहानियां

नुक्कड़ नाटक
कुछ नहीं मुश्किल

सूत्रधारः मैं सीटीडी यानी स्वास्थ्य मंत्रालय के टीबी विभाग की तरफ से आया हूँ। आज हम आपको टीबी के बारे में जानकारी देंगे। हम आपको यह बताएंगे कि टीबी कैसे फैलती है, इसके लक्षण क्या हैं और हम इससे कैसे बच सकते हैं। ये सब जानकारी हम आपको नाटक के माध्यम से बताएंगे। तो प्रस्तुत है नाटक **'कुछ नहीं मुश्किल'।**

(मंच पर सोनू आता है, घड़ी की तरफ देखता है, चौंकते हुए अपने आप से बोलता है):

सोनूः रोज लेट हो जाता हूँ। आज डॉट पड़ी ही पड़ी।
(जल्दी–जल्दी काम पर जाने की जल्दी करता है)
(मंच पर और अन्य लोग एकत्र होते हैं, काम शुरू होता है)

विक्कीः अरे तुम्हें पता है, दुबारा सरकार बदल गई।

राजूः अरे चुनाव हो, सरकार बदले या फिल्में बदलें; अपना कुछ नहीं होने वाला।

सोनूः ठीक कहा। बापू भी इस्तरी करता था। और ये बेटा भी जिन्दगी भर इस्तरी करता रहेगा।
(सब हँसते हैं)

विक्कीः कमीजों में बटन लगाते–लगाते मेरी तो सारी ऊँगलियाँ छिल गई हैं।

राजूः अरे बातें करो लेकिन काम भी करते रहो, अभी मूँछड़ आ गया ना तो बताएगा तुमको। (नकल उतारते हुए) काम कर लो काम। सब हँसते हैं, तभी सोनू को खांसी आती है।

राजू: क्या हुआ, कैसे खांस रहा है।

सोनू: इस खांसी ने परेशान किया हुआ है। लगता है जान लेकर छोड़ेगी।

राजू: अबे क्या बात करता है। सर्दी की खांसी है, ठीक हो जाएगी।

विक्की: दवा की दुकान से खांसी का सिरप ले लेना, दो दिन में ठीक हो जाएगा।

सोनू: हाँ यार इस काम से छुटकारा मिले तो लूँ ना दवाई। पर आज जरूर ले लूँगा दवाई। काफी दिनों से हो रही है खांसी।
(सोनू फिर खांसता है, सभी कोरस में आ जाते हैं, मंच पर सूत्रधार प्रवेश करता है)

सूत्रधार: क्या आपको पता है दर्शको कि दो हफ्तों से अधिक खांसी टी.बी. हो सकती है। इसलिए इसकी तुरन्त सरकारी अस्पताल के टीबी केंद्र में जांच करायें।
हां! दो हफ्ते से ज्यादा की खांसी (बलगम के साथ या बिना बलगम के) टी.बी. हो सकती है। टी.बी. ज्यादातर फेफड़ों में होती है। पर यह शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकती है। जैसे हड्डी, सिर, गुर्दा, गर्दन कही पर भी। इसलिए सावधान! इसे हल्के में ना लें। अपने बलगम की दो बार जरूर जांच करवाये। बलगम के दो सैम्पल यानी नमूने टी.बी. केंद्र में ले जाकर जांच करायें। अरे ये ढोल कहाँ बज रहे हैं, अरे आज तो सोनू की शादी है। तो चलिये शादी में जाकर मजे करते हैं।

गीतः 1 (बारात गीत)

झूमो रे, नाचो रे
गाओ रे, गाओ रे
मेरा यार बना है दुल्हा – 2
मंगल गीत गाओ रे
झूमो रे .....

1) नाच नाचें झूमके
घूम घूम घूमके
ढुमक ढुमक ढुमके
यार तेरे वास्ते – 2
झूमो रे .....

2) चाल चलेंगे तान के
सुर मिलेंगे ताल से
नोट तुझपे वार ते
थार तेरे वास्ते – 2
झूमो रे .....

(गीत समाप्त होता है, सभी पात्र कोरस में आ जाते हैं)

सूत्रधारः सोनू की शादी हो गई। सोनू ने दवाई ली उसकी खांसी भी ठीक हो गई। परन्तु पूरी तरह नहीं। क्योंकि सोनू ने डॉक्टरी सलाह के बिना दवाई खाई। उसे फिर से तकलीफ शुरू हो गई और खांसी भी शुरू हो गई।
(इतना कहकर सूत्रधार कोरस में आ जाता है, फैक्टरी के मज़दूर काम करने आते हैं)

मैनेजरः (मज़दूरों से) सुनो, क्या बात है कि एक हफ्ते से सोनू नजर नहीं आ रहा। शादी की क्या छुट्टी ली वो तो घर का ही हो के रह गया।

राजूः अरे क्या बताएँ मैनेजर साहब। सोनू की हालत बहुत खराब हो रखी है।

मैनेजरः क्यों? क्या हुआ, सब ठीक तो है ना।

राजूः साहब जी। उसे दो हफ्तों से लगातार खांसी हो रही है, और वो बीमार है।

मैनेजरः क्या उसने डॉक्टरी जांच करवायी?

राजूः पता नहीं क्या करता है, पर ठीक नहीं है वो।

मैनेजरः तो ऐसा करो, तुम लोग काम बंद करो, सोनू के घर मिलकर आते हैं।
(सब सोनू के घर जाते हैं)

दृश्यः सोनू सोया हुआ है, बीच–बीच में खांस रहा है, तभी दरवाजे पर खटखटाहट होती है।

सोनू: दरवाजा खुला है, आ जाइए अंदर।
(सब अन्दर आते हैं)

सोनू: नमस्कार मैनेजर साहब, माफ कीजिएगा, इतने दिन काम पर नहीं आ पाया। मैं कई हफ्ते से बीमार चल रहा हूँ। मुझे माफ करना। मैं बहुत बीमार हूँ।

मैनेजरः कोई बात नहीं। हम तो केवल मिलने आये थे। तुम आराम करो। वैसे हुआ क्या है तुम्हें?

सोनू: पता नहीं, काफी समय से खांसी हो रही है, रात को बुखार आता है, वजन भी घट रहा है और भूख भी नहीं लगती।

मैनेजरः तो तुम किसी सरकारी अस्पताल के टीबी सेन्टर में जांच क्यों नहीं करवाते?

सोनू: टीबी!! मुझे टीबी थोड़े ही हुआ है; मैं क्यों जांच करवाऊँ?

मैनेजरः इसमें घबराने और चिंता करने की कोई बात नहीं है। एक साल पहले मुझे भी इस तरह की शिकायत हुई। मैंने भी सरकारी अस्पताल जाकर बलगम की जांच करायी तो पता चला कि मुझे टीबी की शिकायत है। बस 6–8 महीने का इलाज कराया और आज मैं ठीक हूँ। इसमें चिंता करने की क्या बात है। बस तुम जांच करवा लो। ईश्वर न करे कि तुम्हें टीबी हो।

सोनू: ठीक है मैनेजर साहब, मैं कल ही जाकर जांच करवाता हूँ।

मैनेजरः अच्छा हम चलते हैं। अपना ख्याल रखना, जांच जरूर करवा लेना।
(मैनेजर और दोस्त घर से बाहर जाते हैं)

सूत्रधार का प्रवेशः मैनेजर के कहने के अनुसार, सोनू ने सरकारी अस्पताल के टीबी केन्द्र में जाकर जांच करवायी। अब देखिये क्या रिपोर्ट आयी।

गीतः 2 (ईश्वर–प्रार्थना)

हे जग दाता
विश्व विधाता
तेरी जय–जय कार करें
तेरी जय–जय कार करें
तू है अल्लाह
तू है ईश्वर
तेरा ही गुणगान करे – 3
हे जग.....
(गीत समाप्त होता है, सोनू ईश्वर से प्रार्थना करता है, तभी पुजारी भी सुनता है)

सोनूः हे प्रभु। मेरी किन गलतियों की सज़ा तू मुझे दे रहा है कि जो ऐसी बीमारी टी.बी. ने मुझे जकड़ लिया।
(तभी पुजारी सुनता है और उसे समझाता है)

पुजारीः क्या हुआ बेटा। ऐसा क्यों सोचते हो, टी. बी. किसी को भी हो सकती है।

सोनूः क्या मतलब पुजारी जी।

पुजारीः टी.बी. एक संक्रमित रोग है, यानि ये एक आदमी से दूसरे आदमी के सर्म्पक (हवा) से फैलती है।

सोनूः टीबी किसी को भी हो सकती है!!??

पुजारीः टी.बी. किसी को भी हो सकती है। बच्चा, बूढ़ा, जवान, लड़का–लड़की, महिला–पुरुष किसी को भी। मगर डरने और घबराने की जरूरत नहीं है। क्योंकि इसका पूरा इलाज है।

सोनूः तो फिर मुझे क्या करना चाहिए?

पुजारीः सरकार ने डॉट्स सेन्टर खोले हुए है। वहाँ जा कर आप टी.बी. का मुफ्त इलाज करवा सकते हैं। ये उपचार 6 से 8 महीने तक चलता है, मगर तब तक दवाई मत छोड़ना जब तक इलाज पूरा न हो या जब तक डॉक्टर दवाई बंद करने को न कहे।

सोनूः अब मैं समझ गया। अब नहीं घबराऊँगा मैं। जा के पूरा और पक्का इलाज कराऊँगा।

(इतना कहकर सभी कोरस में आ जाते हैं)

गीतः 3

आओ बताएँ तुमको हम
टी.बी. होने पर होता है क्या – 2
टी.बी. का मतलब
मायको बैक्टीरियम
ट्यूबर क्लोसिस, रोगाणु है

1) ये रोगाणु हमला करता है – 2
किडनी, रीढ़ की हड्डी, फेफड़े, मस्तिष्क पर
लेकिन फेफड़ों को है जल्दी पकड़ता – 1
जिसे फेफड़ों का टी.बी. कहते हैं
आओ बताएँ.....।

2) टी.बी. हवा के जरिये फैलती है
खांसते, छींकते बाते करते वक्त
इसीलिए कहते हैं आप से सब
नियमित रूप से दवा लेना हर बार
आओ बताएँ.....।

3) टी.बी. होने के लक्ष्ण हैंः खास तीन सप्ताह या उससे अधिक खांसी खास तौर पर जब रात में बुखार चढ़ जाए, वजन घट रहा हो, हर बार खाना खाने की इच्छा नहीं हो या आप उसके सम्पर्क में हो जिसको टी.बी.
आओ बताएँ.....।

4) 6 से 8 महीने लेना दवाई
डॉक्टर की सलाह निगरानी भाई
ना रोकना बीच में दवाई
हो जाते रोगाणु ज्यादा ताकतवर
आओ बताएँ.....।

5) टी.बी. ना देखे जात–धर्म
ना नस्ल अमीर गरीब का भेद
लेकिन ना घबराना भाई तुम
टी.बी. का इलाज है सम्भव डॉट्स
आओ बताएँ.....।

(गीत समाप्त होता है, मंच पर सूत्रधार प्रवेश करता है।)

सूत्रधारः इतना होने के बाद, सोनू ने 6–9 महीने तक अपना पूरा इलाज करवाया, उसने डॉट्स प्रणाली को अपनाया, और आज सोनू पूरी तरह स्वस्थ हो गया है। नौकरी करने के साथ–साथ आज वो डॉट्स प्रोवाइडर भी बन गया है। देखें तो क्या कर रहा है।

(सतीश का घर)
वह अपने घर में अखबार पढ़ रहा है।
तभी सोनू प्रवेश करता है और दरवाजा खटखटाता है।

संतीशः कौन है?

सोनूः मैं हूँ सोनू

सतीशः ओफ हो। टीबी की क्या शिकायत हुई, हर दूसरे दिन दवा खिलाने आ जाते हैं, और अब तो मैं ठीक भी हो गया। क्या जरूरत है दवा खाने की।
(इतना कहकर दरवाजा खोलता है)

सतीशः नमस्कार सोनू भाई। और कैसे हो?

सोनूः एक गिलास पानी लेकर आओ
(सतीश पानी लाता है, सोनू पीता है)

सोनूः अब एक गिलास अपने लिये पानी लाओ।

सतीशः मुझे प्यास नहीं लगी, दूसरा गिलास किस लिये

सोनूः दवाई नहीं खानी तुम्हें?

सतीशः दवाई? अब तो मैं ठीक हो गया हूँ। बुखार भी नहीं आता और खांसी भी बंद हो गई है।

सोनूः जब दवाइयां खाना शुरू कर देते हैं तो ऐसा ही होता है। हम लोग धीरे–धीरे अच्छा महसूस करने लगते हैं, लेकिन पूरी तरह ठीक नहीं होते। 6–8 महीने का पूरा कोर्स करना पड़ता है। तभी टीबी के रोगाणु मरते हैं। इसलिए दवाई जल्दी से खाओ।

सतीशः अच्छा ठीक है, खाता हूँ लेकिन एक बात पूछूँ आपसे।

सोनूः हाँ पूछो।

सतीशः एक सिगरेट पी लूं, बड़ी तलब हो रही है।

सोनू: अच्छा, डॉक्टर ने मना किया ना। जब तक इलाज चले तब तक किसी भी नशीली चीजों का सेवन नहीं करना। ये दवा जो खा रहे हो वह असर करनी बंद कर देगी।

सतीशः अच्छा खाता हूँ।

सोनू: मेरे पीछे भी यही करते होगे।

सतीशः नहीं पहली बार मैंने पूछा है। पहली बार गलती की।
(सतीश दवाई खाता है)

सोनू: अच्छा चलता हूँ। फिर आऊंगा, परसों।

सतीशः फिर!!

सोनू: अच्छा!!
दोनों हँसते हैं, सोनू चला जाता है।

गीतः 4

ये डॉट्स डॉट्स डॉट्स
डॉट्स का मतलब होता है
सीधी निगरानी उपचार
ऐसा इसलिए करते हैं
कि छूटे ना दवाई
ओ बोलो–बोलो डॉट्स – 2

1) चुन लेना वो होगा
तुम में से एक
दोस्त, पड़ोसी या अध्यापक
पंडित हो या नाई
हो बोलो–बोलो डॉट्स .....

2) नियमित रूप से
लेना तुम दवाई
6 से 8 महीने तक सुन लो
ना करना ढ़िलाई
ओ बोलो–बोलो डॉट्स डॉट्स .....

3) मुफ्त में मिलती है सारी दवाई
आरएनटीसीपी जिसको
कहते हैं सब भाई
ओ बोलो–बोलो डॉट्स डॉट्स .....

(गीत समाप्त होता है, मंच पर सूत्रधार प्रवेश करता है)

सूत्रधारः ओ बोलो–बोलो डॉट्स .....। जी हाँ डॉट्स ही है जो टी.बी. से लड़ता है। मगर ये इलाज हमें बीच में नहीं छोड़ना है। क्योंकि यदि हम इसे बीच में ही छोड़ देंगे तो जो टी.बी. 6 से 8 महीने में ठीक होनी है वो ठीक होने में 24 से 27 महीने तक लगा सकती है। इसलिए सावधान। हमें तो इसे जड़ से मिटाना है। एक बात और। वैसे तो शराब और सिगरेट पीना ही नहीं चाहिए। मगर यदि आपका टी.बी. का इलाज हो रहा है तो बिल्कुल भी शराब न पिएँ और न ही बीड़ी–सिगरेट का सेवन करें। क्योंकि ऐसा करने से दवाइयों का असर देर से होगा।

समझे/समझ गए/कुछ नहीं मुश्किल।
(इतना कहकर सूत्रधार कोरस में आ जाता है, अन्तिम गीत शुरू होता है)

अन्तिम गीतः 5

जड़ से मिटा देगें – 2
टी.बी. की बीमारी को
हम दूर भगा देंगे

1) ना लापरवाही बरतेंगे
न हम घबरायेंगे – 2

हम टी.बी. के रोगाणु को
डॉटस थमा देंगे
जड़ से मिटा देंगे

2) डॉटस असर है करता
जब नियम से लेते हैं
दोस्त पड़ोसी या मित्र
सहयोग देते हैं
जड़ से मिटा .....

3) निकले हैं अभियान में
हम तो अब ना रूकने के
टी.बी. का उपचार है
कहते हम ना थकने के
जड़ से मिटा देंगे

4) पक्के इलाज का पक्का वादा
डॉट्स टीबी का पक्का इलाज
हम भी बोले, तुम भी बोलो
डॉट्स है टीबी भगाता
जड़ से मिटा देंगे–2
कुछ नहीं मुश्किल–2

(गीत समाप्त होता है, सभी कोरस में आ जाते हैं, मंच पर सूत्रधार प्रवेश करता है)

सूत्रधारः हम आशा करते हैं कि टी.बी. की बीमारी पर जो संदेश हमने आपको दिया, वह आपको समझ आ गया होगा। क्योंकि डॉट्स है टीबी का पक्का इलाज, डॉट्स टीबी का पक्का इलाज है।
धन्यवाद।

अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क करें:

केन्द्रीय टीबी प्रभाग

स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
निर्माण भवन
नई दिल्ली – 110011
www.tbcindia.org

केन्द्रीय टीबी प्रभाग, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय